11 जुलाई मासिक पुण्य तिथि पर विशेष आलेख

# आचार्य महाप्रज्ञ ने सीखाई लाखों लोगों को जीने की कला

– मुनि जयंतकुमार

9 मई का दिन, सूर्योदय में अभी 15 मिनट शेष थे। दिमाग में उथल–पुथल मच रही थी। चिंतन का दोर जैसे थम गया, हाथ जुड़ गये और जो 91वें जन्म दिवस पर सबके सामने आने वाला था वह मुहं से फूट पड़ा। मैंने सोचा ही नहीं था कि आज परम् श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ को उनके जन्म दिवस के लिए तैयार हो रहे उपहार के सन्दर्भ में निवेदन करूंगा। सहसा मस्तिष्क में आया और निवेदन कर दिया। यह खुशनशीबी की बात थी की पिछले अनेक वर्षों से मुझे प्रतिलेखन कराने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था, जिसकी वजह से प्रातः का समय पूज्यपाद के पवित्र आभामण्डल में बीतता और कोई भी मन की बात निवेदन करने का उचित समय मिलता। यह मैं नहीं समझ पाया कि मेरे मन में जो आचार्यश्री के मीडिया में प्रसारित होने वाले 125 लेखों की दो पुस्तकों के निर्माण का रहस्य था उसको उसी दिन उजागर करने का मन में क्यों आया। मैं उन दो पुस्तकों को विशेष तौर पर तैयार कर जन्म दिन के अवसर पर कर कमलों में समर्पित करना चाहता था। इससे पहले किसी को यह ज्ञात न हो इसका ध्यान रख रहा था, पर उस दिन अपने आराध्य के सम्मुख विचारधारा बदल गई और रहस्य खुल गया। शायद ऐसा लगता है प्रकृति यह चाहती थी कि रहस्य हमेशा–हमेशा के लिए रहस्य ही न रह जाये इसलिए उसने सही समय पर विचार प्रवाह को बदल दिया।

युग की समस्याओं का समाधान देकर विश्व को प्रकाशित करने वाला महासूर्य ऐसे अस्त हो जायेगा, यह कभी नहीं सोचा था। इस महामानव ने जब 2006 भिवानी चातुर्मास में मीडिया का दायित्व सौंपा था तब मैं मीडिया जगत से इतना परिचित नहीं था। अब इस जगत की बारिकियों को जान चुका था और इस वर्ष उसका उपयोग करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के आयामों को जन–जन तक पहुंचाने का स्वप्न देखा था पर वे स्वप्न स्वप्न ही रह गया और परम पूज्यपाद हमें छोड़ अपनी मंजिल की तरफ बढ़ गये। जिसने हमेशा मानव उत्थान की बात अपने सम्मुख रखी, उसके लिए सम्प्रदाय को सीमा नहीं बनने दिया, ऐसे महामानव का अचानक जाना सबके हृदय को आघात पहुंचाने वाला है। उनकी महाप्रयाण यात्रा में पहुंचे लाखों श्रद्धालु इस बात के साक्षी हैं कि उन्होंने लाखों लाखों लोगों पर उपकार किया और जीने की कला का ज्ञान करवाया। मुझे खेद इस बात का है कि मैं उनके महाप्रयाण से ठीक पांच मिनट पहले कुछ निवेदन कर रहा था और उन्होंने उस निवेदन पर बाद में बात करने का संकेत दिया था, उस संकेत के आधार पर मैं वहां से अपने कक्ष मे आ गया और उन दुर्लभ अंतिम क्षणों में उनके उपपात में रहने से वंचित रह गया। काश! मैं वहीं स्थित रहता तो शायद अंतिम क्षणों में अपने आराध्य की नजरों का विषय बन जाता और अपनी नजरों से उस दिव्य मुख मण्डल को निहार पाता।

मुझे आज भी याद है वह दिन जब 1997 में बीकानेर की धरा पर गणाधिपति तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का मधुर मिलन हुआ था। उस मिलन की साक्षी बनी हजारों की भीड़ में एक मैं भी था। मैंने समझ पकड़ने के बाद 12 वर्ष की अवस्था में पहली बार उन महापुरुषों के साक्षात् दर्शन किये थे। उस प्रथम दर्शन में इन महापुरुषों की दिव्यता ने मुझे प्रभावित किया और अपने आपको उनके चरणों में समर्पित करने के विचारों ने तरंगीत करना प्रारम्भ

कर दिया। मुझे संकोच होता था गणाधिपति तुलसी के उपपात में बैठने से पर आचार्य महाप्रज्ञजी को अपनी बात निवेदन करने से कभी डर नहीं महसूस हुआ। जब से मैंने उनके कर कमलों से दीक्षा ग्रहण की तभी से मैंने वही काम किया जो उनहोंने मुझे करने के लिए कहा। मुझे याद नहीं है कि कभी मैंने अपने मन से कुछ करने का आग्रह किया हो। अगर मैंने कभी स्वयं की इच्छा से कुछ करने का मानस भी बनाया तो वह पूरा नहीं हो सका। हमेशा उनके द्वारा सौंपे गये कार्य को संघर्षों के बावजूद सफलता पूर्वक सम्पादित करने का प्रयास किया। उन्होंने मुझे अपरिचित क्षेत्रों में काम सौंपकर उस क्षेत्र में योग्यता अर्जित करने का अवसर प्रदान किया। आज जो भी हूं उनकी वजह से ही हूं। वे मेरी क्षमताओं को उजागर नहीं करते तो शायद मैं एक भोला–भाला इंसान ही रहता और आज के युग की दौड़ में पीछड़ जाता। वे मेरे जीवन के निर्माता थे और जीवन रहस्यों के अभिज्ञ थे। उस महापुरुष की दिव्य आत्मा के प्रति क्षमायाचना करते हुए अपनी श्रद्धासिक्त भावांजलि अर्पित करता हूं।